

बिन ब्लॉगिंग सब सून

डॉ. हरीश अरोड़ा
पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

हर इंसान की यह सोच होती है कि वह अपने विचारों और संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देने के लिए कला के किसी-न-किसी माध्यम को आधार बनाए और इसके लिए उसे सबसे सरल और सषक्त माध्यम मिला 'भाषा'। भाषा ही वह साधन है जो किसी भी मनुष्य को अभिव्यक्ति के लिए एक विराट जगत प्रदान करती है। मनुष्य अनुभूति के क्षणों को जब तक जीता है तब तक वह उसकी निजता का साक्षी रहता है लेकिन जैसे ही वह शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है तब वह उसकी निजता से निकलकर सामाजिक सम्पत्ति बन जाते हैं।

जीवन की पीड़ा को अनुभूत करते हुए उसे शब्दों के आकार देकर साहित्य-सर्जना करने वाले साहित्यकार के लिए तो जैसे उसका साहित्य प्रसव-पीड़ा के बाद के सुखद आनन्द के क्षण का-सा भास देता है। पिछले कुछ वर्षों से जिस तरह से नवीन सूचना प्रौद्योगिकी ने समाज और समूची जीवन-धारा को प्रभावित किया उससे भला साहित्य और साहित्यकार कैसे अछूते रह सकते थे। इंटरनेट और उसकी दुनिया तो एक आम-आदमी के साथ-साथ साहित्यकार के लिए भी काल्पनिक दुनिया थी। अपनी रचनाओं के प्रशंसकों के लिए उसे पाठकों की तलाश करने की आवश्यकता उसे हमेशा रही लेकिन उसने कभी यह न सोचा होगा कि आने वाले कल में उसकी दुनिया प्रकाशक की नहीं वरन् 'पोस्ट और पेस्ट' की होगी। उसकी इस तलाष को पूरा किया ब्लॉग (चिट्ठा) ने – जहाँ वह अपनी

निजता को अभिव्यंजित करने के लिए अपनी संवेदनाओं और विचारों के शब्दों का डिजिटलीकरण करता है और ये शब्द उसके ब्लॉग के माध्यम से समाज के सभी वर्गों के पाठकों तक सहजता से पहुँच जाते हैं। इस तरह देखा जाए तो ब्लॉग निजता की सामाजिक अभिव्यक्ति के डिजिटल-शाब्दीकरण का एक ऐसा माध्यम है जो सूचनात्मक और सृजनात्मक साहित्य को परम्परागत विधाओं के दबाव से मुक्त करता है और अभिव्यंजित होने के लिए विस्तृत कैनवास देता है। यह निजी डायरी भी है और सार्वजनिक किताब भी। यह सृजन-कर्म भी है और विमर्श भी।

एक समय जब साहित्यकारों और कलाकारों के लिए 'कॉफी हाऊस कल्चर' का प्रचलन अपने जोरों पर था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों ने नयी सूचना तकनीकों के आगमन के कारण 'कॉफी हाऊस कल्चर' का प्रचलन हाशिए पर आ गया। उसकी जगह इंटरनेट की सोशल साइट्स ने ले ली। ऐसे में साहित्यकारों के बीच संवादहीनता की स्थिति के चलते उन्हें लगने लगा कि कहीं तकनीक की दुनिया के इस नए सामाजिक क्षेत्र के कारण उनकी दुनिया सीमित न हो जाए, ऐसे में अपने आरम्भिक दौर में इंटरनेट और ब्लॉग लेखन से परहेज करने वाले साहित्यकारों ने इसकी अहमियत को समझा और अपने ब्लॉगों के माध्यम से एक नए समाज और पाठक वर्ग से जुड़ते चले गए। इस तरह 'काफी हाऊस कल्चर' की जगह 'ब्लॉग कल्चर' ने ले ली।

इस ब्लॉग कल्चर का फायदा कला जगत से जुड़े सभी कलाकारों ने उठाया। चाहे वह साहित्यिक ब्लॉगिंग हो, चाहे संगीत ब्लॉगिंग या चित्र ब्लॉगिंग – 'ब्लॉग कल्चर' ने सभी को अपने भीतर समेट लिया।

एक समय जिस कलाकार को, चाहे वह कला के किसी भी माध्यम को क्यों न अपनाता हो, उसे अपनी रचनाधर्मिता को समाज तक लाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती थी। लेखकों की पुस्तकों को आम-सामाजिक या पाठक तक पहुँचाने के लिए प्रकाशकों को पुस्तकालयों की खरीद पर निर्भर रहना पड़ता था। ऐसे में भी उन पुस्तकों के पाठक कौन होंगे और उस पुस्तक पर उनकी प्रतिक्रिया होगी इससे लेखक या प्रकाशक का कोई सीधा-सम्बन्ध नहीं बन पाता था। पुस्तकों के प्रचार-प्रसार के लिए पत्र-पत्रिकाओं में उनकी आलोचनात्मक-समीक्षाओं के लिए पुस्तकों को भेजना अनिवार्य-सा हो गया था। लेकिन तकनीक की इस नयी कल्चर ने तो जैसे रचनाधर्मियों के लिए विमर्श का एक नया दायरा खोल दिया। एक आम सामाजिक से लेकर विशेषज्ञों की आलोचनात्मक टिप्पणियों ने तो जैसे एक नई विमर्श-संस्कृति का निर्माण कर दिया। जिन लेखकों की अभिव्यक्ति सशक्त होने पर भी उन्हें प्रकाशकों का सहारा नहीं मिला वे लेखक भी ब्लॉगिंग की दुनिया के निराला और मुक्तिबोध होने लगे। उन्हें देश ही नहीं बल्कि क्षेत्रीय सीमाओं से बाहर भी पाठकीय-प्रतिस्पर्दन मिलने लगा। लघु-आलोचना का एक नया दौर शुरू हो गया।

ब्लॉगिंग ने आम-सामाजिक को केवल विचारों को पढ़ने या समझने की सीख ही नहीं दी बल्कि अपनी अभिव्यक्ति के लिए विकसित शब्द-भण्डार से भी परिचित कराया। ब्लॉगिंग के आगमन पर जिन रचनाकारों और भाषाविदों ने भाषा के खतरे को लेकर चिन्ता व्यक्त की वही लोग अब

ब्लॉगिंग की इस दुनिया में पंख फैलाकर उसके असीमित आकाश में अपने विचारों और संवेदनाओं को अभिव्यंजित कर रहे हैं। ऐसे लोगों की अभिव्यक्ति ने ही आम-सामाजिक को भाषा-ज्ञान दिया। अब उसके पास भी अपना एक विशाल आकाश था जहाँ उसने अपने भीतर की खुशियों को शब्द-सुमनों से सजाया वहीं अपनी दुःखद अभिव्यंजनाओं पर शब्दों का मरहम भी लगाया।

ब्लॉगिंग की दुनिया में कदम रखते ही एक आम-आदमी के लिए तो जैसे अभिव्यक्ति का ऐसा माध्यम हाथ लगा जिसके लिए उसे किसी दबाव की आवश्यकता नहीं थी। वह अपने संवेदनाओं को स्वयं गढ़ता और ब्लॉग पर चस्पा कर देता। तत्काल प्रतिक्रियाओं ने उसकी रचनाधर्मिता की आलोचना के माध्यम से उसे अपनी कमज़ोरियों को समझने और उन्हें ठीक करने का अवसर दिया। सीखने और सिखाने के लिए इससे बेहतर विकल्प और क्या हो सकता है? दूसरी ओर स्थापित साहित्यकारों के लिए भी यह एक ऐसा माध्यम बन गया कि अब अपनी रचनाओं और भावनाओं के लिए प्रकाशकों के दबाव और रचनाओं के प्रकाशन के संघर्ष से उसे रूबरू नहीं होना पड़ता बल्कि वह स्वयं ही प्रकाशक भी हो गया है और सम्पादक भी। बाज़ार में बैठे प्रकाशकों और सम्पादकों से उसका कोई सरोकार नहीं रहा। निजी और सामूहिक ब्लॉगों के माध्यम से वह अपनी रचनाधर्मिता को एक नया आयाम दे रहा है।

दरअसल पाठकों और लेखकों के बीच सीधा-सम्बन्ध स्थापित करने वाली इस विधा ने समाज के आम-आदमी के साथ-साथ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भी अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए ब्लॉगिंग की ओर अग्रसर किया है। अब तो ब्लॉग-ब्रह्म के मंत्र को समझते हुए वे भी कहने को बाध्य हो गए हैं कि 'बिन ब्लॉगिंग सब सून'। जन-पत्रकारिता और जन-साहित्य (या कहें लोकप्रिय साहित्य) का ऐसा माध्यम जिसने साहित्य

और पत्रकारिता दोनों की ही तस्वीर बदल दी है। अगर कहें कि विमर्श का यह नया आधार आज सबसे सशक्त माध्यम है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ

1. नया मीडिया : अध्ययन और अभ्यास, शालिनी जोशी, शिव प्रसाद जोशी, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 2006
2. ग्लोबल मीडिया और हिन्दी पत्रकारिता, हरीश अरोड़ा, साहित्य संचय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, 2013
3. पत्रकारिता का बदलता स्वरूप और न्यू मीडिया, हरीश अरोड़ा, साहित्य संचय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, 2013
4. भूमण्डलीकरण और ग्लोबल मीडिया, जगदीश्वर चतुर्वेदी व सुधा सिंह, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2007